१७. वस्त्र – हमारी आवश्यकता

बताओ तो !

निम्न चित्रों का अच्छी तरह निरीक्षण करो । अपने मनपसंद कपड़े चुनकर उनके चारों ओर ◯ बनाओ :

अब चुने हुए कपड़ों की कुल संख्या चौखट में लिखो :

देखो कि क्या तुम्हारे द्‌वारा चुने हुए कपड़ों की संख्या तुम्हारे मित्रों द्‌वारा चुने गए कपड़ों की संख्या से मेल खाती है ।

(१) चुने हुए कपड़े कौन-कौन-से दिन पहनने वाले हो?

(२) दिन में कितनी बार कपड़े बदलने वाले हो?

(३) क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि चुने हुए कपड़ों की अपेक्षा कुछ और कपड़े अपने पास होने चाहिए ? यदि ऐसा है, तो उनकी संख्या चौखट में लिखो ।

(४) कपड़ों के अलावा और कौन-कौन-सी वस्तुएँ/आभूषण पहनना तुम्हें अच्छा लगेगा ?

(५) क्या तुम अपने कपड़े मित्रों को पहनने के लिए दोगे?

(६) विज्ञापनों में दिखाए जाने वाले कपड़ों में से कौन-से कपड़े पहनने की तुम्हें इच्छा होती है ?

- हमें कई प्रकार के कपड़े पहनना अच्छा लगता है और ऐसा भी लगता है कि वे कपड़े हमारे पास होने चाहिए ।

करके देखो

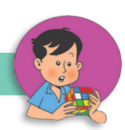

अपने आसपास के परिसर अर्थात रेल स्टेशन, ईंट भट्‌ठा, बस स्थानक, बंजर जमीन आदि स्थानों पर रहने वाले लोगों से जाकर मिलो। नीचे दिए मुद्‌दों के आधार पर उनके साथ चर्चा करो तथा मुख्य बातों का कॉपी में अंकन करो :

(१) उनके पास कुल कितने कपड़े हैं ?

(२) वे ग्रीष्मऋतु में कौन-से कपड़े पहनते हैं ।

(३) शीतऋतु में किस प्रकार के कपड़ों का उपयोग करते हैं ?

(४) वर्षाऋतु में कौन-से कपड़े पहनते हैं ?

(५) त्योहार-समारोहों में कौन-से कपड़े पहनते हैं ?

(६) दिन में कितनी बार कपड़े बदलते हैं ?

- ऊपरी कृति से तुम क्या समझे ?

बताओ तो !

पहली बार की गई 'बताओ तो' की कृति अब पुनः करो तथा फिर कॉपी में लिखो । यह करते समय अपनी **आवश्यकता** को ध्यान में रखो और चित्रों के कपड़ों का चुनाव करो तथा संख्या चौखट में लिखो :

क्या तुम्हारी पहली कृति के उत्तर और इस समय की कृति के उत्तर समान हैं ?

- बच्चो, इन प्रश्नों के उत्तर मिलने पर ऐसा लगेगा कि हमारे पास जितने कपड़े होने चाहिए; उनकी संख्या उससे अधिक है । कपड़े होने चाहिए और उन कपड़ों की सचमुच ही उतनी आवश्यकता होना; ये दोनों भिन्न-भिन्न बातें हैं । आवश्यकता न होने पर भी वस्तुएँ चाहना हमारा लोभ है ।

हम प्रसार माध्यमों द्‌वारा कपड़ों के विभिन्न विज्ञापन देखते हैं और उनकी ओर आकर्षित होते हैं । इस प्रकार वस्तुओं के प्रति निर्मित होने वाला आकर्षण हमारे लोभ को प्रोत्साहित करता है ।

कपड़ों की आवश्यकता और लोभ पर कक्षा में चर्चा करो ।

थोड़ा सोचो !

रोहन और सानिया के पास बहुत कपड़े हैं । इनमें से वे बहुत-से कपड़ों का उपयोग नहीं करते । अब उनके सामने यह समस्या है कि इन कपड़ों का क्या किया जाए । तुम उनकी समस्या हल करने में मदद करो ।

करके देखो

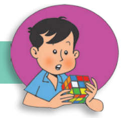

शिक्षकों के लिए सूचना : यह कृति करा लेने के लिए विद्यार्थियों के साथ निकट के वस्त्रोद्योग केंद्र जाएँ अथवा वहाँ के किसी कुशल श्रमिक को साक्षात्कार के लिए बुलाएँ ।

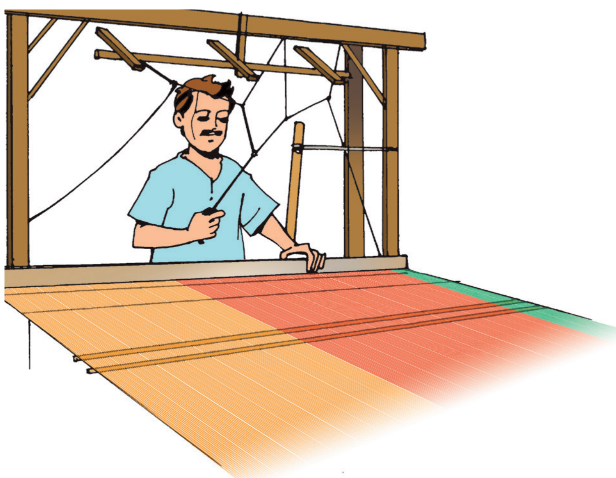

हथकरघा

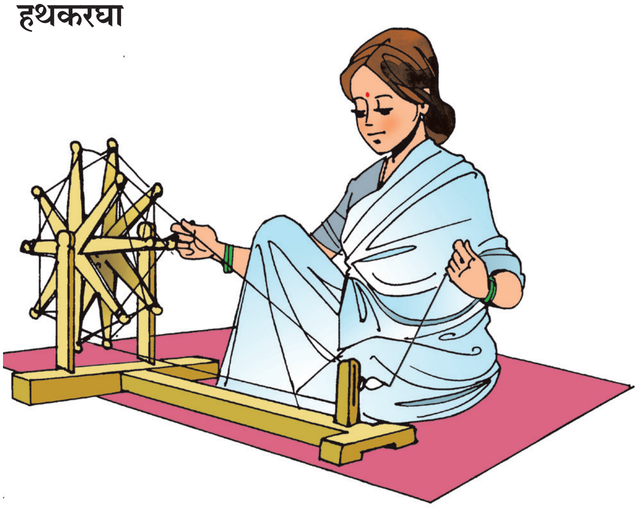

सूत कातना

अपने परिसर में उपलब्ध वस्त्रनिर्माण का एक उद्‌योग देखने जाओ अथवा साक्षात्कार के लिए वहाँ का कोई कुशल श्रमिक बुलाओ । इस उद्‌योग की जानकारी निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर प्राप्त करो ।

(१) यह कौन-सा उद्‌योग है ?

(२) इस उद्‌योग से कौन-सा उत्पाद निर्मित होता है ?

(३) वस्त्रनिर्माण के लिए किस कच्चे माल का उपयोग करते हैं ?

(४) कच्चा माल कहाँ से लाया जाता है ?

(५) कच्चे माल का स्वरूप क्या होता है ?

(६) तैयार होने वाला उत्पाद बिक्री के लिए कहाँ भेजा जाता है ?

(७) इन वस्त्रों का उपयोग किस ऋतु में करते हैं ?

(८) इस उद्‌योग के लिए कौन-कौन-से प्रकार के श्रमिकों की आवश्यकता होती है ?

(९) ये श्रमिक कहाँ से उपलब्ध होते है ?

(१०) अब वस्त्रोद्‌योग में पहले की अपेक्षा कौन-कौन-से परिवर्तन हुए हैं ?

(११) इस उद्‌योग में तुम्हारे सामने आने वाली समस्याएँ कौन-सी हैं ?

हमने ऊपर दिए मुद्‌दों के आधार पर वस्त्रोद्‌योग की जानकारी प्राप्त की । अब हम महाराष्ट्र राज्य के विशेषताओं से परिपूर्ण वस्त्रनिर्माण के उदाहरण देखेंगे। पैठण की पैठणी, येवला की साड़ी, औरंगाबाद की हिमरू शॉल, सोलापुर की चादरें, इचलकरंजी के हथकरघे और यंत्रकरघे से बने वस्त्र इत्यादि ।

अगले पृष्ठ पर दिए गए मानचित्र के आधार पर यह बात तुम्हारे ध्यान में आएगी ।

जिन वस्त्रोद्‌योगों को तुम जानते हो परंतु वे मानचित्र में दर्शाए नहीं गए हैं, उन्हें इस मानचित्र की सूची में लिखो और मानचित्र में उचित स्थान पर दर्शाओ ।

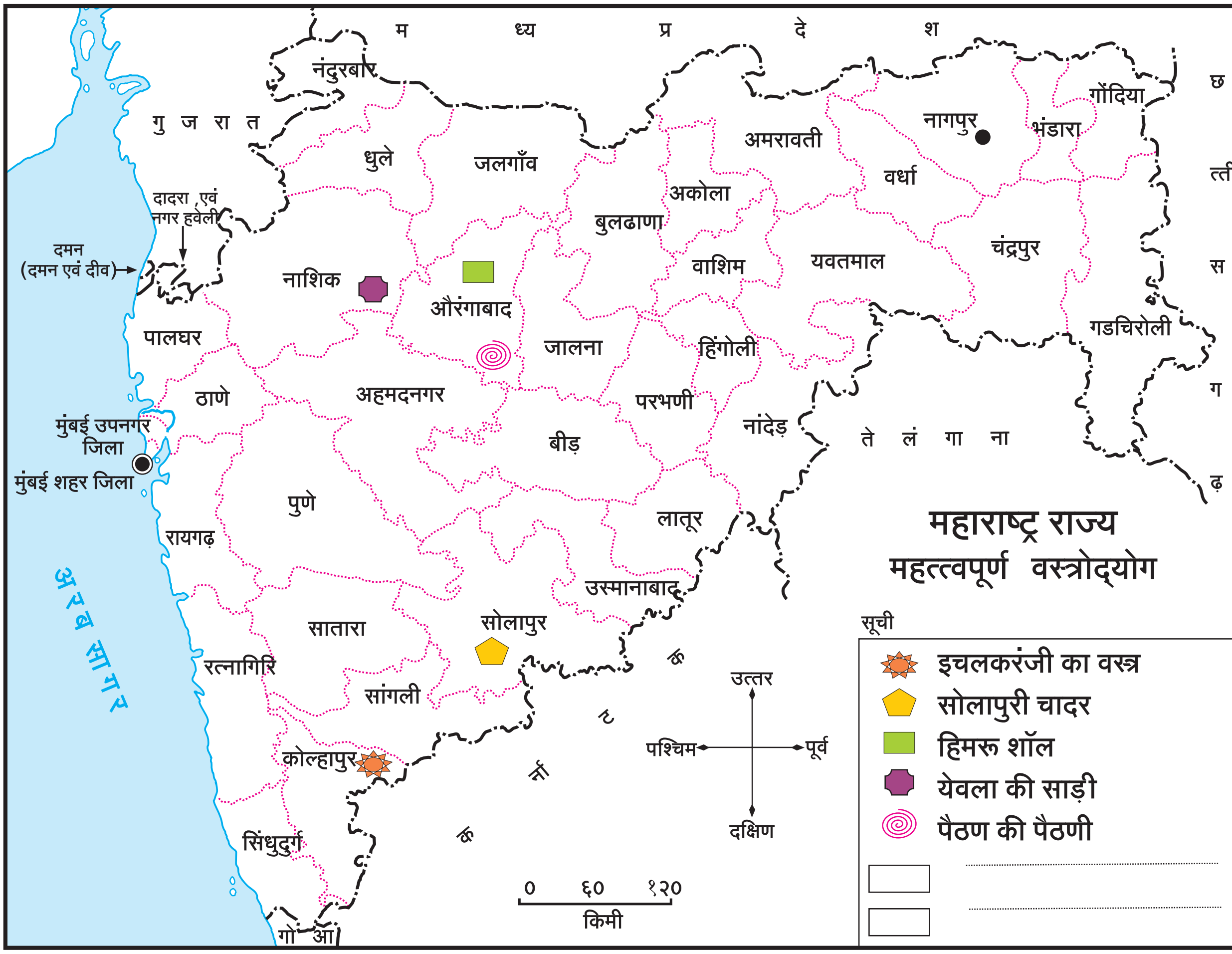

क्या तुम जानते हो ?

लखनवी चिकन, कश्मीरी सिल्क, बनारसी सिल्क, कड़ियल, पीतांबरी, पोचंपल्ली, नारायण पेठ, कांजीवरम, पटोला, मैसूर सिल्क आदि साड़ियों के अनेक प्रकार हैं । देश के भिन्न-भिन्न भागों की ये साड़ियाँ हमारी विविधता को दर्शाती हैं ।

करके देखो

वस्त्रों की विविधता जानने के लिए अभिभावकों के साथ कपड़ों के बाजार में जाओ । वहाँ के लोगों के साथ दिए गए मुद्दों के आधार पर चर्चा करो तथा कॉपी में अंकन करो :

१. वस्त्रों के विभिन्न प्रकार देखो तथा उनके नामों की सूची तैयार करो ।

२. इस सूची के नामों का शिशु, युवक तथा वृद्ध; इनके आयुवर्ग के अनुसार वर्गीकरण करो ।

३. वस्त्रों में से साड़ियों के विभिन्न प्रकारों की जानकारी प्राप्त करो ।

४. साड़ी निर्माण के लिए प्रसिद्ध स्थानों के नाम लिखो ।

५. तुमने जिन साड़ियों के नाम अंकित किए हैं; उन नामों के स्थानों और प्रदेशों को ध्यान में रखकर उनका अंकन ऊपरी मानचित्र में करो ।

प्रदेशों के अनुसार साड़ियों के प्रकारों में भी अनेक विकल्प दिखाई देते हैं । इससे यह बात ध्यान में आती है कि इस समय हमारे पास विभिन्न प्रकार के वस्त्र उपलब्ध हैं । जलवायु की विविधता तथा परिवहन की सुविधाओं के कारण हमें अनेक प्रकार के वस्त्र उपलब्ध हुए हैं । वस्त्रों की यह विविधता हमारे देश की विविधता का एक अंग है ।

करके देखो

अपने घर/परिसर के वयस्क व्यक्तियों से मिलकर निम्नलिखित जानकारी प्राप्त करो :

- अपने बचपन में वे कौन-कौन-से कपड़ों का उपयोग करते थे ?
- उनके द्‌वारा बताए गए कपड़ों की सूची तैयार करो ।
- यह सूची लेकर कपड़े की दुकान में जाओ और देखो कि इनमें से कौन-से कपड़े उपलब्ध हैं ।
- यह जानकारी प्राप्त करो कि कौन-कौन-से कपड़े उस दुकान में मिलते हैं ।
- यह पता लगाओ कि किन कपड़ों का उपयोग अब नहीं किया जाता ।
- ये कपड़े जहाँ से आ रहे थे; उन स्थानों की जानकारी प्राप्त करो ।
- साथ ही यह जानकारी प्राप्त करो कि इनका उपयोग क्यों बंद हो गया ।

परंपरा एवं काल के अनुसार क्या वस्त्रों में परिवर्तन हुआ है, यह जानकारी प्राप्त करो ।

क्या तुम जानते हो ?

मानव के विकास के दौरान उसके शरीर में अनेक परिवर्तन होते गए । शरीर पर स्थित बालों की मात्रा कम होती गई, यह उनमें से ही एक परिवर्तन है । शरीर पर बालों का आवरण कम होने के कारण ऋतु परिवर्तन से सुरक्षा की आवश्यकता का जन्म हुआ । मानव द्‌वारा विविध कालखंडों में उपयोग में लाए गए वस्त्रों में विविधता दिखाई देती है । आदिकाल के आरंभ में मानव वस्त्र का उपयोग नहीं करता था । इसके बाद वृक्षों की छाल तथा पत्तियों का उपयोग होने लगा । कालांतर में वह शिकार करके मारे गए जानवरों की खाल का उपयोग करने लगा । कपास जैसी वनस्पतियों से सूत तैयार करने की कला अवगत हो जाने पर सूती कपड़े का उपयोग होने लगा । निम्न चित्रों से यह बात तुम्हारे ध्यान में आएगी ।

इसे हमेशा ध्यान में रखो !

प्रकृति ने इतना दिया है कि प्रत्येक की आवश्यकता की पूर्ति हो सकेगी परंतु प्रकृति मनुष्य के हाव/लोभ की पूर्ति नहीं कर सकती । मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी चाहिए । तभी प्रकृति हम सभी का पोषण कर सकती है ।

क्या तुम जानते हो ?

मुंबई कपड़ा मिलों के लिए विश्व का प्रसिद्‌ध स्थान था । इस द्‌वीप पर आर्द्र जलवायु होने के कारण लंबे धागे के कपड़े तैयार करना सहज था । इसलिए मुंबई वस्त्र उद्‌योग का बड़ा केंद्र बन गया । वस्त्र उद्‌योग के विकास के कारण भारत के विभिन्न प्रदेशों से रोजगार के लिए लोग यहाँ आए और स्थायी रूप से रहने लगे । तब से मुंबई भारत के आर्थिक लेन-देन का महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गई ।

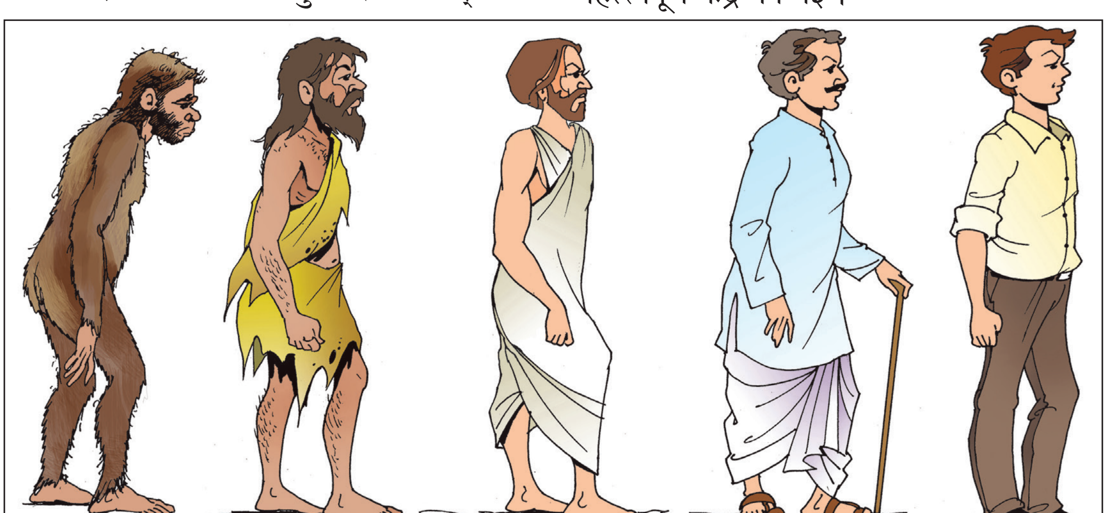

वस्त्रों में कालानुरूप हुआ परिवर्तन

थोड़ा सोचो !

जलवायु में होने वाले परिवर्तन के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रदेशों में उपयोग में लाए जाने वाले कपड़ों में परिवर्तन होते हैं । जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, महाराष्ट्र तथा केरल राज्यों में उपयोग में लाए जाने वाले पोशाकों के चित्र प्राप्त करो । इसके आधार पर वहाँ की जलवायु के विषय में कक्षा में चर्चा करो ।

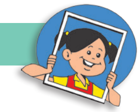

हमने क्या सीखा ?

- वस्तुओं की आवश्यकता न होने पर भी उसे पाने की इच्छा रखना लोभ कहलाता है ।
- आवश्यकतानुसार वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए ।
- हमारे देश के विभिन्न प्रदेशों में विशेषताओं से परिपूर्ण वस्त्र निर्माण की परंपरा है ।
- देश के वस्त्रों की विविधता मानचित्र की सहायता से हमने समझ लिया ।

स्वाध्याय

१. **निम्न में से जो वस्तुएँ तुम्हारे पास होनी चाहिए ऐसा लगता है; उनके नाम अपनी कॉपी में लिखो :**
(१) पानी की बोतल (२) गेंद (३) गोली (४) लैपटॉप (५) फूलदान (६) मोबाइल (७) साइकिल (८) स्कूटर (९) फोटोफ्रेम (१०) खाने का डिब्बा
इनमें से किन वस्तुओं का उपयोग तुम स्वयं करोगे ?

२. **पारंपरिक वेशभूषा की प्रतियोगिता के लिए तुम कौन-कौन-से कपड़ों का चुनाव करोगे ? उनके नाम कॉपी में लिखो ।**

३. **नीचे तालिका में अपने देश के कुछ राज्यों के नाम दिए गए हैं । वहाँ के प्रसिद्ध वस्त्रों के नाम तालिका में लिखो :**

राज्य का नाम	वस्त्र
महाराष्ट्र	
ओड़िशा	
पश्चिम बंगाल	
कर्नाटक	
गुजरात	
पंजाब	

उपक्रम :

१. आसपास में लगी कपड़ों की प्रदर्शनी देखने जाओ । वहाँ रखे गए कपड़ों की उपयोगिता के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो ।

२. अपने परिसर में स्थित खादी ग्रामोद्योग केंद्र देखने जाओ । वहाँ कपड़ों के प्रकारों तथा जहाँ वे तैयार होते हैं, उन स्थानों के विषय में जानकारी प्राप्त करो ।

* * *

IH3CZB